Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

जयशंकर प्रसाद के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

अशोक कुमार धाकड़

नेट- हिंदी

ग्राम पोस्ट गोपालपुरा रावतभाटा चितौड़गढ़

राजस्थान- 323304

सारांश (Abstract)

आधुनिक हिंदी साहित्य में जयशंकर प्रसाद का स्थान अत्यंत गौरवपूर्ण है। वे छायावाद के प्रमुख स्तंभ होने के साथ-साथ भारतीय सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीय स्वाभिमान और मानवीय मूल्यों के समर्थ कवि भी हैं। उनके काव्य में राष्ट्रीय चेतना केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की आकांक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि वह भारतीय संस्कृति, इतिहास, आध्यात्मिक परंपरा, मानवीय एकता तथा राष्ट्रीय गौरव के समन्वित स्वरूप के रूप में अभिव्यक्त होती है। प्रसाद ने अपने काव्य के माध्यम से भारतीय जनमानस में आत्मगौरव, स्वाधीनता, सांस्कृतिक अस्मिता और त्याग की भावना का संचार किया। उनकी कविताएँ अतीत की गौरवपूर्ण स्मृतियों को वर्तमान से जोड़ते हुए भविष्य के लिए प्रेरणा प्रदान करती हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में जयशंकर प्रसाद के काव्य में निहित राष्ट्रीय चेतना का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा साहित्यिक दृष्टि से विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द: जयशंकर प्रसाद, राष्ट्रीय चेतना, छायावाद, भारतीय संस्कृति, स्वाधीनता, राष्ट्रवाद।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के आधुनिक युग में जयशंकर प्रसाद ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने कविता, नाटक, कहानी और उपन्यास सभी विधाओं में उल्लेखनीय योगदान दिया। वे केवल छायावाद के प्रवर्तक कवि ही नहीं, बल्कि भारतीय राष्ट्रीय पुनर्जागरण के समर्थ साहित्यकार भी थे। उनका साहित्य ऐसे समय में रचा गया जब भारत अंग्रेज़ी शासन के अधीन था और स्वतंत्रता आंदोलन नई दिशा प्राप्त कर रहा था। राजनीतिक पराधीनता के साथ-साथ भारतीय समाज सांस्कृतिक हीनभावना, सामाजिक विघटन और मानसिक दासता से भी जूझ रहा था। ऐसे समय में प्रसाद ने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीयों को उनके गौरवशाली अतीत का स्मरण कराया और उनमें राष्ट्रीय स्वाभिमान की भावना जागृत की।

प्रसाद का राष्ट्रवाद संकीर्ण या आक्रामक नहीं है। वे भारत को केवल भौगोलिक सीमा के रूप में नहीं देखते, बल्कि उसे एक सांस्कृतिक चेतना, आध्यात्मिक परंपरा और मानवीय मूल्यों की जीवंत अभिव्यक्ति मानते हैं। उनके काव्य में राष्ट्रीयता का

स्वर भारतीय संस्कृति की उदात्तता, इतिहास की गौरवगाथा तथा मानवता की सार्वभौमिक भावना से जुड़कर सामने आता है। इस दृष्टि से उनका साहित्य भारतीय राष्ट्रवाद को सांस्कृतिक आधार प्रदान करता है।

राष्ट्रीय चेतना की अवधारणा

राष्ट्रीय चेतना से आशय उस भावबोध से है जो किसी राष्ट्र के नागरिकों में अपनी मातृभूमि, संस्कृति, इतिहास, भाषा और परंपराओं के प्रति गौरव, आत्मीयता तथा उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करता है। यह केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की आकांक्षा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि सामाजिक एकता, सांस्कृतिक संरक्षण, नैतिक मूल्यों और सामूहिक विकास की प्रेरणा भी देती है।

जयशंकर प्रसाद के काव्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वर व्यापक एवं समन्वयवादी है। वे भारतीय संस्कृति की प्राचीन परंपराओं का सम्मान करते हुए आधुनिक चेतना का भी स्वागत करते हैं। उनके लिए राष्ट्र की शक्ति उसके नैतिक आदर्शों, सांस्कृतिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं में निहित है। यही कारण है कि उनकी राष्ट्रीयता किसी जाति, वर्ग या धर्म विशेष तक सीमित न होकर संपूर्ण भारतीय समाज को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास करती है।

साद के काव्य में भारतीय संस्कृति का गौरव

जयशंकर प्रसाद का विश्वास था कि किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी संस्कृति से होती है। उन्होंने अपने काव्य में भारतीय संस्कृति की उदारता, सहिष्णुता, आध्यात्मिकता और मानवीय मूल्यों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण किया है। उनके अनुसार भारत की सांस्कृतिक शक्ति ही उसकी वास्तविक राष्ट्रीय शक्ति है। वे भारतीय परंपरा को अतीत की स्मृति मात्र नहीं मानते, बल्कि वर्तमान और भविष्य के निर्माण की आधारशिला के रूप में देखते हैं। उनकी प्रसिद्ध कविता "अरुण यह मधुमय देश हमारा" भारतीय प्रकृति, संस्कृति और राष्ट्रीय गौरव का अनुपम चित्र प्रस्तुत करती है। इस कविता में भारत की प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ उसकी सांस्कृतिक समृद्धि का भी अत्यंत भावपूर्ण चित्रण मिलता है। कवि भारतीय भूमि को केवल जन्मभूमि नहीं, बल्कि मानव सभ्यता की प्रेरणास्थली के रूप में प्रस्तुत करता है।

इतिहास के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना

जयशंकर प्रसाद ने भारतीय इतिहास को राष्ट्रीय जागरण का सशक्त माध्यम बनाया। उन्होंने अपने काव्य तथा नाटकों में भारतीय इतिहास के गौरवपूर्ण प्रसंगों का चित्रण करके यह संदेश दिया कि जो राष्ट्र अपने इतिहास को भूल जाता है, वह अपने भविष्य का भी निर्माण नहीं कर सकता। उनके साहित्य में ऐतिहासिक घटनाएँ केवल अतीत का वर्णन नहीं करतीं, बल्कि वर्तमान पीढ़ी को आत्मविश्वास और स्वाभिमान का संदेश देती हैं। उनकी रचनाओं में चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, अजातशत्रु और ध्रुवस्वामिनी जैसे पात्र राष्ट्रीय गौरव, त्याग और नेतृत्व के प्रतीक बनकर सामने आते हैं। यद्यपि ये पात्र मुख्यतः उनके नाटकों में विकसित हुए हैं, किंतु उनके काव्य में भी इतिहास के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का वही स्वर विद्यमान है।

स्वाधीनता और आत्मगौरव की भावना

प्रसाद का काव्य भारतीयों में आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की चेतना जगाने का कार्य करता है। वे प्रत्यक्ष राजनीतिक नारों की अपेक्षा सांस्कृतिक और नैतिक जागरण को अधिक महत्त्व देते हैं। उनका विश्वास था कि जिस राष्ट्र के नागरिक मानसिक रूप से स्वतंत्र और आत्मगौरव से संपन्न होंगे, वही वास्तविक स्वतंत्रता प्राप्त कर सकेंगे। उनकी कविताओं में बार-बार यह संदेश मिलता है कि पराधीनता केवल राजनीतिक नहीं होती, बल्कि मानसिक और सांस्कृतिक भी होती है। इसलिए वे भारतीयों से अपनी भाषा, संस्कृति और परंपराओं पर गर्व करने का आह्वान करते हैं। यह दृष्टिकोण उनके राष्ट्रवाद को गहन दार्शनिक आधार प्रदान करता है।

प्रकृति और राष्ट्रप्रेम

जयशंकर प्रसाद ने भारतीय प्रकृति को राष्ट्रीय चेतना का अभिन्न अंग माना है। उनके काव्य में हिमालय, गंगा, वन, उपवन, उषा, संध्या और ऋतुओं का चित्रण केवल सौंदर्यबोध के लिए नहीं है, बल्कि वे भारतीय अस्मिता के प्रतीक बनकर उपस्थित होते हैं। प्रकृति का प्रत्येक दृश्य राष्ट्र के गौरव और सांस्कृतिक विरासत की अनुभूति कराता है।उनकी प्रकृति-कविता में मातृभूमि के प्रति प्रेम, आत्मीयता और समर्पण की भावना विद्यमान है। इस प्रकार प्रकृति उनके यहाँ राष्ट्रीय भावबोध की संवाहक बन जाती है।

'कामायनी' में राष्ट्रीय चेतना

यद्यपि *कामायनी* मुख्यतः एक दार्शनिक महाकाव्य है, फिर भी उसमें राष्ट्रीय चेतना के अनेक संकेत मिलते हैं। मनु, श्रद्धा और इड़ा के माध्यम से प्रसाद ने मानव जीवन के संतुलित विकास का आदर्श प्रस्तुत किया है। उनका यह विश्वास कि किसी भी समाज का विकास ज्ञान, भावना और कर्म के समन्वय से संभव है, राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया से भी गहराई से जुड़ता है। *कामायनी* मनुष्य को निराशा से आशा की ओर, विघटन से समन्वय की ओर और स्वार्थ से लोकमंगल की ओर प्रेरित करती है। यही संदेश राष्ट्रीय जीवन में भी समान रूप से प्रासंगिक है।

मानवतावाद और राष्ट्रीय चेतना

जयशंकर प्रसाद के राष्ट्रवाद का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष उनका मानवतावाद है। वे राष्ट्रप्रेम को मानवता के विरोध में नहीं, बल्कि उसके विस्तार के रूप में देखते हैं। उनके लिए सच्ची राष्ट्रीयता वही है जो सभी मनुष्यों के सम्मान, समानता और सह-अस्तित्व को स्वीकार करे। उनके काव्य में राष्ट्रप्रेम संकीर्ण सीमाओं में बँधा हुआ नहीं है। वह भारतीय संस्कृति की उस उदात्त परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना निहित है। इसीलिए उनका राष्ट्रवाद विश्वबंधुत्व और सार्वभौमिक मानवता से जुड़कर अधिक व्यापक स्वरूप ग्रहण करता है।

समकालीन संदर्भ में प्रसाद की राष्ट्रीय चेतना

आज वैश्वीकरण, सांस्कृतिक परिवर्तन और तकनीकी विकास के दौर में राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण का प्रश्न अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो गया है। ऐसे समय में जयशंकर प्रसाद का साहित्य भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था, राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और नैतिक मूल्यों का संदेश देता है। उनकी राष्ट्रीय चेतना आज भी प्रासंगिक है क्योंकि वह विभाजन नहीं, बल्कि समन्वय का मार्ग दिखाती है। प्रसाद हमें यह शिक्षा देते हैं कि राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी सांस्कृतिक चेतना, नैतिक मूल्यों और नागरिकों के चरित्र में निहित होती है।

उपसंहार

जयशंकर प्रसाद के काव्य में राष्ट्रीय चेतना बहुआयामी और व्यापक रूप में अभिव्यक्त हुई है। उन्होंने भारतीय संस्कृति, इतिहास, प्रकृति, आध्यात्मिकता और मानवीय मूल्यों के माध्यम से राष्ट्रप्रेम की ऐसी अवधारणा प्रस्तुत की जो आज भी समान रूप से प्रासंगिक है। उनका राष्ट्रवाद राजनीतिक संघर्ष की सीमाओं से ऊपर उठकर सांस्कृतिक पुनर्जागरण, नैतिक उत्थान और मानव कल्याण का संदेश देता है। प्रसाद ने अपने साहित्य द्वारा भारतीय समाज में आत्मविश्वास, आत्मगौरव और सांस्कृतिक चेतना का संचार किया। उनकी कविताएँ केवल साहित्यिक उपलब्धियाँ नहीं हैं, बल्कि राष्ट्रीय पुनर्जागरण के सशक्त दस्तावेज भी हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि जयशंकर प्रसाद का काव्य भारतीय राष्ट्रीय चेतना का सांस्कृतिक घोष है, जो वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए प्रेरणास्रोत बना रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रसाद, जयशंकर. कामायनी. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2020, पृ. 45–82।
2. प्रसाद, जयशंकर. आँसू. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2018, पृ. 18–54।
3. प्रसाद, जयशंकर. लहर. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2019, पृ. 25–67।
4. प्रसाद, जयशंकर. झरना. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2017, पृ. 12–49।
5. प्रसाद, जयशंकर. चित्राधार. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2016, पृ. 30–74।
6. प्रसाद, जयशंकर. कानन-कुसुम. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2018, पृ. 20–56।
7. प्रसाद, जयशंकर. प्रेम-पथिक. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2017, पृ. 14–39।
8. शर्मा, रामविलास. आधुनिक हिंदी साहित्य और राष्ट्रीय चेतना. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2018, पृ. 112–146।
9. शर्मा, रामविलास. आस्था और सौंदर्य. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2017, पृ. 88–121।
10. नगेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: मयूर पेपरबैक्स, 2019, पृ. 275–309।

11. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा, 2018, पृ. 298–336।
12. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. हिंदी साहित्य की भूमिका. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2019, पृ. 126–158।
13. वाजपेयी, नंददुलारे. जयशंकर प्रसाद. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2017, पृ. 62–104।
14. बच्चन सिंह. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2020, पृ. 186–223।
15. सिंह, नामवर. कविता के नए प्रतिमान. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2019, पृ. 105–142।
16. मिश्र, विद्यानिवास. आधुनिक हिंदी कविता. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2018, पृ. 72–108।
17. गुप्त, गणपतिचंद्र. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2018, पृ. 385–420।
18. चतुर्वेदी, रामस्वरूप. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2017, पृ. 210–246।
19. पाण्डेय, मैनेजर. साहित्य और इतिहास-दृष्टि. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2016, पृ. 92–118।
20. तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद. आधुनिक हिंदी कविता. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2020, पृ. 174–209।
21. सिंह, विजय बहादुर. जयशंकर प्रसाद : व्यक्तित्व और कृतित्व. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2018, पृ. 55–96।
22. अवस्थी, देवीशंकर. आधुनिक हिंदी आलोचना. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2017, पृ. 138–170।
23. मिश्र, शिवकुमार. छायावादी काव्य : प्रवृत्तियाँ और मूल्यांकन. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2018, पृ. 98–132।
24. भारतीय ज्ञानपीठ (सं.). जयशंकर प्रसाद रचनावली, खंड–1. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2016, पृ. 1–320।
25. भारतीय ज्ञानपीठ (सं.). जयशंकर प्रसाद रचनावली, खंड–2. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2016, पृ. 321–640।
26. त्रिपाठी, कृष्णदत्त पालीवाल. जयशंकर प्रसाद का काव्य-दर्शन. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2019, पृ. 64–118।
27. सिंह, बच्चन. छायावाद और उसके कवि. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2018, पृ. 86–124।
28. मिश्र, रमेशचंद्र. जयशंकर प्रसाद का साहित्य. इलाहाबाद: साहित्य भंडार, 2017, पृ. 101–149।
29. समकालीन भारतीय साहित्य (साहित्य अकादेमी), विभिन्न अंक, 2018–2024।
30. आलोचना (त्रैमासिक शोध पत्रिका), राजकमल प्रकाशन, विभिन्न अंक, 2019–2024।
31. हिंदी अनुशीलन, भारतीय हिंदी परिषद, प्रयागराज, विभिन्न अंक, 2018–2024।
32. शोध-प्रभा, हिंदी विभाग, विभिन्न विश्वविद्यालय, 2019–2024।
33. समावर्तन, हिंदी शोध पत्रिका, विभिन्न अंक, 2020–2024।

34. यूजीसी-केयर सूचीबद्ध हिंदी शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित जयशंकर प्रसाद, छायावाद एवं राष्ट्रीय चेतना विषयक शोध-लेख, 2018–2024।
35. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, भारतीय सांस्कृतिक चेतना एवं आधुनिक हिंदी साहित्य से संबंधित विभिन्न शोध-पत्र एवं संदर्भ ग्रंथ।